## Quarterly Review of

# The European Division of the General 

 Conference of Seventh-Day AdventistsStatistical Report of Conferences and Mission Fields for the First Quarter 1923



| 总 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
| $2)$ | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
|  | ........ | ......... | ........ | ........ | ......... | ......... | ........ | $\cdots$ | ..... | ... |
| $\begin{array}{rrrr}28591 & 1 & 1 \\ 1842 & 4 & 2 \\ 503 & 14 & 0 \\ 167 & 1 & 5 \\ 172 & 15 & 3\end{array}$ | $\begin{array}{rrr}1 & 13 & 8 \\ 1 & 8 & 4 \\ 1 & 6 & 6 \\ 16 & 8 \\ 18 & 8 \\ & 18 & 5\end{array}$ | $\begin{array}{rrrr}5 & 0 & 0 \\ 120 & 17 & 7 \\ 45 & 0 & 4 \\ 17 & 6 & 4 \\ 10 & 6 & 4 \\ 9 & 17 & 3\end{array}$ | $\begin{array}{rrrr}534 & 3 & 2 \\ 360 & 8 & 11 \\ 119 & 6 & 6 \\ 54 & 19 & 5 \\ 38 & 16 & 11\end{array}$ | 8 6 <br> 6 3 <br> 6 3 <br> 7 2 <br> 6 6 <br> 5 2 | 6 <br> 6 <br> 4 <br> 4 <br> 19 <br> 19 <br> 18 | $\ldots$ | $\begin{array}{rrrr}26 & 6 & 4 \\ 1544 & 9 & 3 \\ 2317 & 17 & 5 \\ 615 & 14 & 0 \\ 538 & 14 & 7 \\ 304 & 0 & 4\end{array}$ | $\begin{array}{r} 45 \\ 44 \\ 20 \\ 8 \\ 6 \end{array}$ | $\begin{array}{r}1503 \\ 1353 \\ 443 \\ 216 \\ 153 \\ \hline\end{array}$ | 1112 775 318 170 127 |
| $\begin{aligned} & \qquad 52761511 \\ & \$ 2465792 \end{aligned}$ | $\begin{array}{r}188 \\ 189 \\ \\ \hline 672\end{array}$ | ${ }_{208}^{2082110}$ | $\begin{array}{r} 11071 \pm 11 \\ 517691 \end{array}$ | $\begin{aligned} & 7 \\ & 167 \end{aligned}$ | 1118 55 59 |  | 5337 24016 | 123 | 3668 | 2502 |
|  | 2706 1269000 | 196095 1167809 00 | 455235 102710900 | 623 167800 | 2635 | 44448200 | 3251715 840059500 | 28 39 | 774 1171 | 550 823 |
| M205073 | 1254000 | $\underline{683312} 00$ | 149498300 | 1680100 100 |  | ${ }_{2255855}^{4400}$ | 435691400 | 15 | 649 | 377 |
| 1482300700 | 1441900 | 55907300 | 72247900 | 117700 | 70000 | 149089500 | 771617000 | 17 | 1227 | 900 |
| 1915527200 | 1503500 | 836333400 | 148009600 | 170800 | 230000 | ......... | 517907400 | 25 | 1376 | 1115 |
| 1638747600 | 1393405 | 285243300 | 94570300 | 315200 | 636000 |  | 763308500 | 22 | 1205 | 637 |
| K 8059958200 | $\left\|\begin{array}{r} 1206580 \\ 6812 \\ 605 \end{array}\right\|$ | $\begin{array}{r}6045385 \\ \mathbf{4 4 4 7 7} 0 \\ \hline 00\end{array}$ | $\begin{array}{r}7414827 \\ 7728600 \\ \hline 0\end{array}$ | 1909200 7670 | 500000 | 4095321 1127200 | 11057125000 | 17 1 1 | 575 109 | 400 78 |
| \$10794 55 | 143 | 66173 | 110176 | 023 | 549 | 19708 | 3539003 | 164 | 7086 | 4900 |
|  |  |  |  |  |  |  | 9009 <br> 31829 <br> 00 |  |  |  |
| - 4426471 | 9742 | 338912 | 710903 | 2287 | 2000 | 650000 | 3863824 | 18 | 434 | 322 |
| 1490033 | 9490 | 152760 | 179504 | 2116 | 18400 | 332000 | 1945516 | 9 | 118 | 80 |
| 1326362 | 5620 | 60956 | 232170 | 1242 |  | 283900 | 2783740 | 12 | 222 | 222 |
| Kс $\begin{array}{r}13033089 \\ \$ 4434 \\ \hline 88\end{array}$ | 79 268 266 | 10237 294 | 18964 546 | 1789 085 | 24440 815 | 1725516 57517 | 126779 8 83889 | 66 | 1488 | 1203 |
| M25002719 00 | 1409397 | 187369900 | 75731800 | 148300 | ...... | 120851200 | 158318500 | 27 | 1656 | 1164 |
| 1869625200 | 1146800 | 108571800 | 75761200 | 112900 |  | 23985900 | 857423100 | 45 | 1605 | 1046 |
| 1922949400 | 1143200 | 236019500 | 97012300 | 198000 |  | 107591900 | 603143400 | 41 | 1585 | 1082 |
| 1553632700 | 875200 | 61474900 | 62766600 | 70600 | ......... | 23715900 | 757163800 | 59 | 1638 | 980 |
| 1468491600 | 1166300 | 69481300 | 40028400 | 87000 |  | 21186 ล0 | 478918000 | 40 | 1258 | 919 |
| 2200648000 | 1103000 | 124971100 | 104806300 | 117500 |  | 46652000 | 1024672800 | 53 | 2218 | 1530 |
| 30941546 51613 |  | 171365100 | 159348700 |  |  | 97721800 | $\begin{array}{r} 8245504 \pm \\ 22073600 \\ 00 \end{array}$ | 45 4 4 | 1752 43 | ${ }^{1892}$ |
| ¢1611300 | 645100 | 11220600 | 3003100 | 177700 |  |  | 22073600 |  |  | 27 |
| $\begin{array}{r} 14661384900 \\ \$ 814521 \end{array}$ | 1228300 068 | $\begin{array}{r} 970473600 \\ 327 \quad 12 \end{array}$ | $\begin{array}{r} 618458400 \\ 18949 \end{array}$ | $\left.\begin{array}{\|c\|c\|} 1330 & 90 \\ 0 & 04 \frac{2}{2} \end{array} \right\rvert\,$ |  | $\begin{array}{r} 438655200 \\ 24370 \end{array}$ | $\begin{array}{r} 4744273600 \\ 2087418 \end{array}$ | 314 | 11750 | 8140 |
| $\text { SF } \begin{array}{r} 45000 \\ 274 \times 203 \end{array}$ |  |  |  |  |  |  |  |  | 786 | 634 |
| FF 3344245 | 3420 | 575175 | 5743 5833 60 | 12 18 78 | 50800 80 | $\ldots$ | 1878800 | ${ }_{25}$ | 406 | ${ }_{397}$ |
| 2018495 | 6728 | 113505 | 468780 | 1941 | 8 |  | 1555645 | , | 285 | 152 |
| BF 2999768 | 9173 | 300976 | 275078 | 1762 |  | ........ | 1665650 | 6 | 383 | 279 |
| Lire 1007815 | 5361 | 151385 | 144455 |  | 4700 |  | 1172570 | 11 | 188 | 145 |
| Ptas 394810 | 2378 | 92270 | 100380 | 1160 |  |  | 1394705 | 10 | 178 | 164 |
| Esc 464161 | 3136 | 2195 | 116207 | 800 | ..... | ......... | 88005 | 4 | 151 | 121 |
| FF 258370 | 380. |  | 74220 | 1090 |  |  | 230555 | 6 | 71 | 62 |
| SF 318120 |  | 360550 | 42460 |  | 8495 |  |  | .. | $\ldots$ | . |
| \$11820 66 | 416 | 237375 | 227158 | 175 | 11672 |  | 1233359 | 94 | $24+8$ | 1954 |
| P 4818800 <br> D 3455 | 535 5158 51 | 377900 84 85 | 311600 21295 | $\begin{array}{r}7661 \\ 444 \\ \hline\end{array}$ | ........ | ........ | .... | 2 3 3 | 110 50 | 90 45 |
| FF 32000 | 1777 | 8000 |  | 333 |  |  |  | 2 | 17 | 17 |
| \$ 37916 | 216 | 2927 | 2248 | 030 |  |  |  | 7 | 177 | 152 |
| M11879855 00 | 3443300 | 56228100 | 73342200 |  |  |  | 730150000 |  |  |  |
| 1434216200 | 3649400 | 81172000 | 129244200 | 5354 <br> 3943 <br> 00 | ......... | ......... | 290017000 224662000 | 19 | 384 <br> 399 | 307 310 |
| 936565900 | 2432600 | 41329600 | 110480500 | 394300 | ....... | . |  |  |  |  |
| $\begin{array}{r} \hline \text { M3558777600 } \\ \$ 98854 \end{array}$ | $\begin{array}{r} \hline 3168900 \\ 088 \\ \hline \end{array}$ | $\begin{array}{r} 178729700 \\ 4965 \end{array}$ | $\begin{array}{r} 315066900 \\ 87 \quad 52 \\ \hline \end{array}$ | $\begin{array}{r} 439700 \\ 012 \end{array}$ |  |  | $\begin{array}{r} 1244829000 \\ 622415 \\ \hline \end{array}$ | 47 | 1059 | 819 |


|  |  |  |  |  | INS |  |  |  | SSE |  |  |  | ¢ | $\pm$ | $\stackrel{\sim}{\infty}$ |  |  |  |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
| NAME OF CONFERENCE OR MISSION | $\begin{gathered} 9 \\ 0 \\ 3 \\ \text { 3 } \\ 0 \\ 0 \\ 0 \\ 0 \\ 0 \end{gathered}$ |  |  | $\begin{aligned} & 0 \\ & 0 \\ & 0 \\ & 0 \\ & \infty \end{aligned}$ |  |  |  |  |  |  | $\begin{aligned} & \text { ㅌ } \\ & \text { 릉 } \\ & 0 \\ & +0 \\ & Z \end{aligned}$ |  | Ordained Minis |  |  |  | No. of Canvas |  |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| Rumanian Union Con. <br> Muntenia Conference. | 25 |  |  | 3 | 34 |  | 5 | 3 | 24 | 32 | 10 | 1186 | 2 | 1 | 8 | 1 | 12 | 3 |
| Moldavian " | 35 | 1022 | 45 | 2 | 37 | 84 | 16 | 1 | 36 | 53 | 31 | 1053 | 2 | 2 | 4 | 8 | 12 | 26 |
| Transilvanian | 45 | 1264 | 2 | 4 | 7 | 13 | 4 | 2 | 10 | 16 | -3 | 1261 | 3 | 1 | 5 | 4 | 8 | 28 |
| Banat Mission | 16 | ${ }^{1233}$ | 6 | 1 | 3 | 10 | 2 | 1 | 4 | 7 | 3 | 336 | - | 2 | $\ldots$ | 2 | 2 | 21 6 |
| Totel | 121 | 3795 | 58 | 10 | 81 | 149 | 27 | 7 | 74 | 108 | 41 | 3836 | 7 | 6 | 17 | 20 | 34 | 84 |
| Scandinavian Union Conference <br> Danish Conference $\qquad$ | 48 | 2300 | 15 | 1 | 4 | 20 | 19 | 11 | 6 | 36 | -16 | 2284 | $\stackrel{2}{7}$ |  | 8 | 3 1 | 13 | 5 |
| Norwegisn " | 46 | 1954 | 21 | 4 | 1 | 26 | 6 | 7 | 11 | 24 | -2 | 1956 | 6 | ${ }_{6}^{4}$ | 5 | 1 | 135 | 93 |
| Swedish " | 44 | 1325 | 5 | 1 | 2 | 8 | 7 | 6 | 4 | 17 | -9 | 1316 | 6 | 4 | 7 | .. | 23 | 52 |
| Finnish " | 20 | 973 | - | 2 | $\ldots$ | 2 | 9 | 4 | $\cdots$ | 13 | -11 | 962 | 5 | 3 | 7 | 4 | 20 | 39 |
| Esthonian " | 15 | 1025 | 2 | 11 | $\cdots$ | 13 | 51 | $\cdots$ | 3 | 54 | -41 | 984 | 5 | 4 | 1 | 4 | 19 | 39 |
| Latvian ' | 29 | 1569 | 22 | 4 | 37 | 68 | 26 | 6 | 86 | 68 | -5 | 1564 | 9 | 3 | 7 | 1 | 44 | 64 |
| Misce.taneo | $\cdots$ | ...... | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | ...... | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | ... |
| Total | 197 | 9164 | 65 | 23 | 44 | 132 | 118 | 34 | 60 | 212 | -80 | 9066 | 40 | 24 | 35 | 13 | 154 | 266 |
| West German Union Con <br> Hanover Confexence $\qquad$ | 40 | 1603 | 68 | 4 | 8 | 80 | 16 | 2 | 13 | 31 | 49 | 1652 | 2 9 | 3 | 3 | 4 | 1 $<0$ | 3 89 |
|  | 40 | 1572 | 23 | 8 | 21 | 52 | 33 | 6 | 16 | 55 | -3 | 1569 | 6 | 2 | 1 | 9 | 27 | 89 |
| Hessia-Westpbalia C. | 40 | 1532 | 103 | 5 | 11 | 119 | 19 | 6 | 7 | 32 | 87 | 1619 | 5 | 5 | 2 | 5 | 28 | 4 |
| Rhenish Conference | 38 | 2258 | 99 | 2 | 21 | 122 | 17 | 4 | 10 | 81 | 91 | 2349 | 7 | 2 | 2 | 6 | 14 | 81 |
| Thuringian " | 56 | 1848 | 71 | 3 | 18 | 92 | 18 | 8 | 18 | 44 | 48 | 1896 | 9 | 3 | 3 | 7 | 32 | 81 |
| Holland " | 23 | 496 | 82 | 1 | 13 | 46 | 2 | $\ldots$ | 8 | 10 | 36 | 532 | 4 | 1 | 3 | $\ldots$ | 16 | 24 |
| Total | 237 | 9309 | 396 | 23 | 92 | 511 | 105 | 26 | 72 | 203 | 308 | 9617 | 42 | 16 | 14 | 31 | 134 | 242 |
| Unattached Fields <br> Búlgarian Mission | 7 | 123 | 7 | $\cdots$ | $\cdots$ | 7 | $\cdots$ | $\cdots$ | 2 | 2 | 5 | 128 | 2 | 1 | 1 | 1 | $\cdots$ | 5 |
| Hungarian Conference................. | 37 | 813 | 17 | 1 | 4 | 22 | 11 | 1 | 4 | 16 | 6 | 819 | 4 | 4 | 8 | 3 | 36 | 55 |
| Jugoslavian Mission................... | 27 | 437 | 4 | 1 | $\cdots$ | 5 | $\ldots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | 5 | 442 | 3 | $\ldots$ | 1 | 10 | 33 | 47 |
| MISSIONS $\qquad$ |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| Ethiopian Union Mission <br> Central Abyssimian Mission. |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 2 |  |  |  |  |
| Gallaland Misbion......................... | 1 | 6 | $\cdots$ | $\ldots$ | . | … | ... | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | 6 | 3 | 2 | $\cdots$ | 5 | $\ldots$ | 8 |
| Eritrea Mission. | 1 | 7 | $\cdots$ | ... | $\ldots$ | ... | ... | $\cdots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | $\ldots$ | 7 | $\cdots$ | 1 | $\cdots$ | 6 | $\ldots$ | 7 |
| East African Missions |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| Kenya Mission ........................... | 5 | 403 | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | 403 | 2 | 5 | 2 | $\cdots$ | $\cdots$ | 9 |
| Pare " ${ }_{\text {Mwanza }}$ "....................... | 4 | 220 | ... | $\cdots$ | $\cdots$ | ... | $\ldots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | ... | $\ldots$ | 220 | 1 | 1 | - | $\ldots$ | $\cdots$ | 2 |
| Mwanza ${ }_{\text {Ruanda }}$ ". | 2 | 26 | ... | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | ... | $\ldots$ | $\ldots$ | $\ldots$ | 26 | 2 | 2 | 1 | $\ldots$ | $\cdots$ | 5 |
| Ruanda " ${ }_{\text {West African Missions }}$ | 1 | 5 | $\ldots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | $\ldots$ | $\ldots$ | 5 | 2 | 1 | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | 3 |
| Gold Coass Mission ................... | 7 | 300 | $\ldots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | .. | $\ldots$ | $\cdots$ | 300 | 1 | . | 1 | 10 | $\cdots$ | 12 |
| Sierra Leone "، ..................... | 11 | 120 | $\cdots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | ... | $\ldots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | 120 | 2 | 4 | 11 | 9 | $\ldots$ | 26 |
| Nigeria " ${ }_{\text {M }}$ /................. | 8 | 210 | ... | $\ldots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | ... | $\ldots$ | ... | 210 | 1 | 2 | ... | 7 | $\cdots$ | 10 |
| Miscellaneous Missions | 5 | 65 | $\ldots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | ... | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | ... | $\ldots$ | 65 | 2 | 1 | $\ldots$ | 2 | 1 | 6 |
| Persian "*. | 1 | 12 | … | $\ldots$ | ... | $\ldots$ | ... | $\ldots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | 12 | 1 | 1 | $\cdots$ | 5 | $\ldots$ | 7 |
| Mauritius " | 6 | 147 | $\cdots$ | ... | ... | ... | ... | $\cdots$ | $\ldots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | 147 | 1 | 4 | 1 | 2 | $\ldots$ | 8 |
| Iceland " | 5 | 186 | ... | ... | $\ldots$ | $\ldots$ | ... | $\ldots$ | ... | ... | $\ldots$ | 186 | 1 | 1 | ... | $\ldots$ | $\ldots$ | 2 |
| Faroe Islands Mission ................. | 1 | 19 | ... | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\cdots$ | $\ldots$ | $\ldots$ | ... | $\ldots$ | 19 | 1 | $\ldots$ | ... | ... | $\cdots$ | 1 |
| Mesopotamisn " ................ | 1 | 8 | ... | $\cdots$ | $\cdots$ | ... | $\cdots$ | $\ldots$ | ... | ... | .. | 8 | ... |  | ... | ... | $\cdots$ | $\ldots$ |
| Totals for Missions | 60 | 1744 |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 1744 | 21 | 25 | 16 | 46 | 1 | 109 |
| Russian Unions. | 379 | 9069 | 405 | 159 | ... | 564 | ... | .. | ... | 516 | 48 | 9117 | ... | $\ldots$ | ... | $\cdots$ | $\cdots$ | 107 |


| $\stackrel{\otimes}{\#}$ |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
| $\begin{array}{rr} \text { Lei } & 282887 \\ 1189819 \\ 1495 \\ & 1490781 \\ & 2756417 \end{array}$ | 24054 11723 11820 8877 | 42551 13016 14840 1485 5128 5180 | 9529160 11005 13539 135 335781 | 6600 2300 3300 3500 2500 | ……...... | …........ …....... $\ldots . . . . . .$. | 89587 <br> 4999 <br> 50794 <br> 500 <br> 813 <br> 800 | 30 39 30 18 | 1225 991 1263 342 | 1028 971 1118 311 |
| $\begin{array}{ll} \hline \text { Lei } & 57966888 \\ \$ & 276033 \end{array}$ | 15274 073 | 75537 $\mathbf{3 4 9}$ 34 | 68194 29298 | $\begin{array}{r} \hline 3700 \\ 017 \end{array}$ |  |  | 17619350 271068 | 137 | 3821 | 3428 |
| $\begin{array}{ll} \\ \mathrm{SKr} & 17520 \\ \mathrm{DKr} & \mathbf{4 2} \\ 53105 \\ 80\end{array}$ | 2329 | 399066 |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 2229 | 39906 | 1206644 | 703 | 1000 |  | 1289009 | 69 | 1942 | 1331 |
|  | 1340 | 633195 | ${ }^{1} 502661$ | 863 | 15000 | ....... | ${ }_{16767} 3064$ | 88 | ${ }_{1123}$ | $1100 \cdot$ |
| Fmk 7569488 | 7888 | 7258880 | 1517562 | 9123 |  |  | 8140300 | 45 | 773 | 608. |
| Emk 15893725 | 16152 | 897500 | 6814350 | 7329 | 161500 |  | 42424600 | 26 | 700 | 626 |
| Latts 1157651 | 740 | 467610 | 140329 | 395 | .... ...... | ........ | 1293270 | 166 | 1643 | 1300 |
| SKr 374318 |  | 19783 | 83873 |  | ......... |  | ........... |  | ...... |  |
| \$ 3332988 | 368 | 626184 | 701179 | 146 | 4709 |  | 2950500 | 445 | 7469 | 5975 |
|  | 1895500 | 102659200 | 177953000 | 169900 |  | 94439600 | 9214488 1142767200 |  | 1566 |  |
|  | 1474800 | 112611900 | 150438100 | 167700 |  | 68233300 | ${ }_{8314414} 00$ | 40 | 1442 | ${ }^{1020}$ |
|  | 1692700 | 150618000 | $1882 \pm 27$ 00 | 209300 |  | 58094300 | 1732554900 | 40 | 1351 | ${ }_{937}$ |
|  | 25516600 | 233783800 | 236204800 | 200100 |  | 70988500 | 1162400700 | 38 | 1950 | 1387 |
|  | 1236100 | 151378200 | 135263000 | 152800 |  | 52574700 | 992784400 | 56 | 1652 | 1177 |
|  | 1641 | 45925 | 85830 | 248 | ..... | ..... ...... | 1034219 | 23 | 538 | 344 |
| \$10431 97 | 108 | 39542 | 61343 | 011 |  | 19129 | 3761240 | 237 | 8499 | 5837 |
| $\begin{aligned} & \text { Lewe } 3482631 \\ & \$ \quad 25236 \end{aligned}$ | 27208 189 | 290295 2104 | 439685 3186 | 57 0 0 41 | ........... | ........... | ............ | 8 | 156 | 121 |
| $\begin{array}{lr} \hline \mathrm{Kr} & 146471340 \\ \$ & 29294 \end{array}$ | 178247 036 | 7243075 2888 | 13361590 3482 | 457 0 0 |  | 130000 0 026 | 3686358 9215 90 | 37 | 754 | 651 |
| $\begin{array}{ll} \text { Din } & 6000070 \\ \$ & 588 \\ \hline 24 \end{array}$ | 13375 131 | $\begin{array}{r}847990 \\ 8314 \\ \hline\end{array}$ | $\begin{array}{r} 617500 \\ 6054 \\ 50 \end{array}$ | $\begin{array}{r} 3315 \\ 038 \end{array}$ | ........... | ........... | $\begin{array}{r} 118537000 \\ 237074 \end{array}$ | 33 | 550 | 498 |
| .............. | …...... | …......... | …........... | …....... | …........... | ............... | ….......... | 1 | 20 11 | 16 |
|  | , | .......... | . | ........ | $\ldots$ |  |  |  | 10 |  |
| \$ 17243 | 043 | 5514 | 14019 | 048 | .... ... | ........ | $\ldots$ | 26 | 1708 | 1495 |
| 6830 | 031 |  | 3738 | 025 |  |  |  |  |  |  |
| $\begin{array}{r}36 \\ \hline 86 \\ 23429 \\ \hline\end{array}$ | 141 4686 | 2469 415 | 4673 468 | 275 177 |  | ............ | . | ${ }_{3}^{1}$ | 300 132 | 272 118 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| 30493 20432 | 102 1 170 | 7338 | 125 56 56 | 045 108 | ............. | ….......... | .............. | 12 | 594 430 | 395 409 |
| 8470 | 040 | 3711 | 5946 | 046 |  |  |  | 10 | 500 | 430 |
| 26589 | 255 | 4626 | 4531 | 141 |  |  |  |  | 40 |  |
| 3645 | 304 | 1069 | 3353 | 369 |  |  | ........... | ${ }^{2}$ | 30 | 28 |
| 54346 | 370 | 874 | 8542 | 064 | .......... | ............ | ........... | 24 | 306 | 289 |
| 15080 | 081 | 4942 | 4568 | 051 | ...... | ........... | ........ | 3 | 58 | 31 |
| 5724 186916 | 301 22365 | 898 4050 | 2373 <br> 3788 <br> 8 | 177 974 |  |  |  |  | 25 8 | $\begin{array}{r}25 \\ 8 \\ \hline\end{array}$ |
| \$ 392873 | 225 | 38778 | 74146 | 065 |  |  |  | 103 | 4588 | 3893 |
| $\begin{array}{r} \text { Rb } 743972385 \\ \$ \mathbf{1 2 3 9 9} 54 \\ \hline \end{array}$ | $\begin{array}{r} 8160303 \\ 136 \\ \hline \end{array}$ | $\begin{array}{r} 112381570 \\ 187302 \\ \hline \end{array}$ | $\begin{array}{r} 65035686 \\ 108398 \\ \hline \end{array}$ | $\begin{array}{r} 19460 \\ 032 \end{array}$ |  |  |  | 316 | 8000 | 8000 |

RECAPITULATION.


HOME MISSIONARY DEPARTMENT and MISSIONARY

| NAME OF CONFERENCE OR MISSION | Field Membership | H.M. | M.V. | H.M. | M.V. | H.M. | M.V. | H.M. | M.V. |  | M.V. |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
|  | 1 |  |  |  |  |  |  |  |  | 6 |  |
| British Union | 3667 | 1450 | 377 | 5469 | 1170 | 2378 | 659 | 1448 | 368 | 312 | 66 |
| Central European Union. | 7551 | 12166 | 2508 | 20986 | 3283 | 2334 | 689 | 1087 | 292 | 297 | 1936 |
| East German Union ............ | 11939 | 15581 |  | 17697 |  | 1936 |  | 845 |  | 169 |  |
| West German Union .............. | 9617 | 11570 | 2233 | 18424 | 5213 | 1261 | 243 | 559 | 85 | $470^{\circ}$ | 43 |
| Latin Union ...................... | 2653 | 3610 |  | 4596 |  | 1354 |  | 680 |  | 292 |  |
| Rumanian Union ................... | 3836 | 7857 | 596 | 4268 | 265 | 347 | 104 | 306 | 68 | 250 |  |
| Scandinavian " | 9066 | 3380 | 829 | 6089 | 1246 | 1639 | 525 | 722 | 258 | 1038 | 143 |
| Czechoslovakian Union........... | 1635 | 6229 | 1199 | 6179 | 1321 | 299 | 146 | 180 | 71 | 37 | 35 |
| Polish Union Mission.............. | 1123 | 3629 | 594 | 2058 | 478 | 135 | 24 | 47 | 18 |  | 6 |
| Bulgarian Mission ............... | 128 | 163 | 7 | 135 | 7 | 40 | 6 |  | 6 | 342 | 120 |
| Hungarian Conference............ | 819 | 6390 | 3951 | 5688 | 2534 | 290 | 325 | 182 | 80 |  |  |
| Jugoslavian Mission .............. | 442 | 8519 | 1470 | 5996 | 1912 | 488 | 39 | 233 | 21 | ...... | ...... |
| Totals |  | 80544 | 13744 | 97585 | 17429 | 12451 | 2760 | 5989 | 1267 | 3213 | 2049 |

## The First Quarter

OUR statistical secretary has given us the following :-


This is an encouraging report. Our membership at the close of the first quarter this year was 4, r94 more than at the close of the first quarter of last year. The number of new members for the
quarter is over 2,000 . We hope that all conferences will soon have their church membership lists revised so that our losses will not be so large. The value of literature sales is really difficult to determine as the exchange is so unstable. But we wish to call attention to the gratifying increase in tithes and offerings. These figures represent the actual amount of dollars received, no matter whether the German mark stands at joo to the dollar as it did last year or 150,000 to the dollar as it does now. We are grateful to our brethren in the Central Powers as well as in all lands for their faithfulness in bringing in their tithes and offerings in these uncertain times. No one should be discouraged if the money seems to decrease in value. It can be used with good effect for the upbuilding of God's cause. Our great concern must ever be to increase our membership and to keep up the spiritual interest of our churches. We are

RECAPITULATION.


VOLUNTEER DEPARTMENT.-Report for First Quarter, 1923.

|  | M.V. | Н.M. | M.V. | H.M. | M.V. | H.M. | $\text { M. } \overline{\mathrm{V} .}$ | B.M. | $\text { M. } \nabla .$ | H.M. | M.V. |  |  | Dollars |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
| 7 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | 13 | 14 |
| 89479 | 44890 | 50501 | 13705 | 2989 | 1164 | 706 | 68 |  |  | 58 |  |  | $\ldots$ | ..... ...... |
| 79656 | 22951 | 74859 | 3587 | 6088 | 29 | 202 | 46 | 1184 | 224 | 73 | 28 |  | ... | ......... |
| 87557 |  | 98210 |  | 2345 |  | 281 |  | 1121 |  | 129 | $\cdots$ |  |  |  |
| 140859 | 24637 | 115524 | 10982 | 4718 | 791 | 149 | 2 | 1529 | 153 | 19 | 28 |  | 16374500 | 910 |
| 16832 |  | 4130 |  | 1519 |  | 565 | $\ldots$ | ... | ... | 8 | ... | Frs | 131095 | 24277 |
| 11780 | 1481 | 10443 | 2250 | 898 | 12 |  |  | ... | ... |  |  |  |  |  |
| 42171 | 8274 | 21998 | 6671 | 3448 | 598 | 810 | 233 | $\ldots$ | ... | 23 | 8 |  |  | ......... |
| 4253 | 953 | 2826 | 1084 | 52 | 4 | ... | ... | ... | $\ldots$ | $\ldots$ | 7 | Kc | 27670 | 814 |
| 8796 | 1757 | 908 | 289 | 10 | 2 | ... | ... | ... | ... |  | ... | PM | 94067900 | 5391 |
| 1174 | 308 |  |  |  |  | ... | ... | ... | ... | 7 |  |  |  |  |
| 5277 | 1006 | 6205 | 1020 | .... | 10 | ... | $\ldots$ | ... | $\ldots$ | $\ldots$ | 7 | Kr | 2105300 | 421 |
| 1760 | 514 | 65821 | 1437 |  | ...... | ... | ... | ... | ... | ... | ... | Din | 49850 | 361 |
| 489594 | 106766 | 445925 | 41005 | 21962 | 2619 | 2713 | 349 | 3834 | 377 | 312 | 78 |  |  | 32174 |

grateful to God and our faithful workers for the good beginning made this year.

L. H. Christian.

## The Statistical Report

Owing to the fact that some failed to send in their reports promptly, the statistical report is published late this time. On the other hand we are glad that we are able to present a more complete report than ever. Reports have come in from almost every foreign field so that we now are able to specify the membership of the missions. Formerly we had to estimate this membership, and we now find that our estimates were too high, compelling us to reduce the entire membership by II2.

2,104 new members have been added by bap-
tism and by vote during the first quarter of 1923 compared to 1,318 in the same period of time last year. The net increase was 792 compared to 582 the same quarter last year, the entire membership at the close of the first quarter of 1923 being 63,511.

In converting the different amounts of tithe, etc., into dollars, the following principle has been applied. For the tithes and the offerings for local church work the rate of exchange at the end of the quarter has been used. Mission offerings and special offerings have been reported to the treasurer each month, and we therefore felt it more safe to use the rates of exchange applied when the funds were received by the treasurer. The literature sales have been based upon the dollar value of the books and other publications.
Berne, fune 20, 1923.
H. L Henriksen.

Statistical Secretary.

## RUSSIA

Report for the Fourth Quarter Ending Dec. 31, 1922.


## In Arabic Fields

Having formerly been connected in active missionary work in the Arabic fields, it has been my privilege, after an absence of nine years, to make an extended tour in these eastern countries, visiting Egypt, Palestine, Transjordania, Syria and Mesopotamia with a view to looking after the scattered flock that, in some parts, had not enjoyed
the visit of a foreign missionary for seven and ten years respectively.
Spending ten days with the brethren in Upper Egypt and the Delta, Elder George Keough, the director of that field, accompanied me into Palestine and later into Syria. At Jerusalem we met Sister Marie Meyer, who had remained loyal to the truth during all this time of solitude. She
gave us over $£ 12$ in tithe and offerings which she had faithfully laid aside in the hope that some day a worker would finally come. During the war she had been interned in Egypt.
From Jerusalem we made several side trips into Ramallah, north of the city, also to Taybeh, which is ancient Ophra, and later into Salt, in Transjordania, at which points work had been carried on before the war but had to be abandoned on this account. At Ophra, the people had drawn up a petition to our Mission Board twelve years ago requesting that we come and open up work among them. They were willing to provide a lot for the erection of a school. We still found some of these friends who were greatly delighted when we produced a facsimile of their original request which they again reiterated in all form hoping that soon their heart's desire would be fulfilled.

At Salt a man called Michael Hallal el Haddad had begun to keep the Sabbath after our workers had been removed and, having heard at the time that we paid tithe, did the next best thing and handed over considerable sums to the local Protestant church. With all the other Christians he had a hard time during the war. When flying he hid $£ 220$ in the ground, taking only $£ 100$ with him and he was very fortunate indeed to find them on his return, which proved a great help to him in getting his business, which had been entirely looted during his absence, started again. He sells linen and clothes stuff, closing his tidy-iooking shop every Friday evening, so that he was generally known as Michael es sabti, that is, Michael the Sabbath-keeper, under which name we immediately found him.

At Damascus we found several of our Armenian members formerly of Asia Minor and, not knowing the address of our Syrian brother, the Lord led him to us in the open street of this large city with 500,000 inhabitants, when we had lost hope of tracing him, as he just tapped me on the shoulder when we were about to return to our hotel. We had not met for the last ten years.

Proceeding to Beirut, I remained here and in the vicinity for about three weeks, making visits to the various points where we used to labour. Also here a number of Armenians of our churches in Anatolia had found refuge in the camp, some 30,000 having flocked into this city alone. We also visited Sidon, where other members were found.

Reaching Aleppo in northern Syria it was very providential to find a German Swiss gentleman in the office of a business man to whom I had an introduction from friends in Beirut, who was having a rather hard time finding a companion for his long journey across the plains of Syria into Baghdad-the very place I was planning to go to.
A few days following a very heavy rainfall we set out on the toilsome journey on which we often had to get out of our Ford car and give it a lift through the mud and then come back to fetch the luggage. The roads were mostly obliterated by
the heavy rains and, where possible, we drove alongside the slopes of mountain ridges to avoid the swampy plains. My main objective had been Mosul, but everybody dissuaded me from choosing that direct route, thie fonger one to Baghdad, I understood, being comparatively less dangerous. The Lord had His angels protect us all the way so that, in spite of most wild rumours and actual dangers, we safely reached Baghdad, the city of the Kaliphs, after completing the sixth day of hard travel pretty well shaken up and wearied after such a long and arduous run.

Here I was met by some of the family of Brother Bashir Abo Hasso, the pharmacist, who had connected with us at Beirut in IgIo and had since been out here acting as a dispenser in the large hospital of the Church Missionary Society. During the war he was a medical officer with the Turks, taken prisoner by the British, interned for some time in India and then released to Basra where he opened up a chemist's shop. Later, as the country was occupied, he followed the troops and finally opened up general stores at Mosul and Baghdad, the main business being at this latter city, where they pay a rent of $£ 870$ annually for the shop and their dwelling. Prices are high here. I was greatly pleased to find that the premises were closed on the Sabbath.

Taking the train I enjoyed the company of his mother and brother as I travelled northward. At Shergat, the terminus of the railway, a motor-car awaited us, and within five more hours we reached Mosul, a journey of twenty-two hours now while, ten years ago, it took me over ten days in a wagon. Brother Bashir was delighted and greatly touched that I had come after all amid these unsettled times and, with his relatives, gave me a warm welcome.

Immediately arrangements were made for meetings every night. The Lord greatly blessed our efforts and prepared the harvest after the faithful seed-sowing of this brother, while all alone without the blessings of association with others of like faith. March 17 th our first church was organized in Mesopotamia with eight members, Brother Bashir being ordained as its first elder. His mother, his wife, two of his married sisters, his brother and a cousin with her son making the covenant. Brother Bashir's grandfather, Michael Saaty, was the first to accept Protestantism about 1851, when American Congregationalists opened up the work in Mesopotamia, later ordaining him elder of the church. His son-in-law, Bashir's father, was the last elder during a period of fifteen years until his death in 1915 . Presbyterians have taken over the work in later years conducted by the Church Missionary Society.

The Lord has prospered Brother Bashir in his work and all are agreed that this is due to his faithfulness as a real Christian. I found that he built a fine house costing over $£ 3,000$, and learned also that during the last four years or so he had passed on about $£_{2}, 000$ as tithe and offerings to
the church at Bombay. When leaving these dear brethren after spending six weeks with them, he gave me ar cheque for $£ 400$ in addition to 250 rupees requesting that the Mission Board endeavour to put forth every effort to develop the work in Mesopotamia.

Returning by the same route I reached Aleppo after four days this time, as the roads were better. At Beirut I was very fortunate in meeting Elder Erzberger who, as I learn from a recent letter, has had the privilege of baptizing thirteen souls at various points in Syria, all Armenians. There are now forty-six members in Syria and, as in the days of the apostles, the Lord is using the hardships of His people, who had to leave their homesteads on account of persecution, for the advancement of His cause, as our brethren are faithful in speaking the message to all with whom they come in contact. Never before have I realized the greatness of the work to be done in these lands and also the most providential openings for a rich harvest.
W. K. Ising.

## A Child Acting Upon Principle

Some weeks ago a letter was received at the Division office written by one of our workers in Germany in behalf of a little girl of seven years called Hertha, the daughter of faithful members of a certain church.
With a group of others she had been sent by the Red Cross to Switzerland for recreation and had the good fortune of being received into the home of a family in beautiful Emmental, known for its rich milk and cream cheese.

Soon difficulties arose on the question of food as these people had pigs and little Hertha suspected that the cake, pastry and all the other good things her kind hosts lavished on their young guest were prepared with pork-fat. All persuasion availed nothing and she would often run away from the table rather than partake of the food pressed upon her. She even stoutly refused to eat butter which she protested was lard until one day she observed them produce it from the milk of their own cows.
Being unable to offer a sufficiently clear reason for her conduct, which was interpreted as stubbornness by these friends, they took up correspondence with her family and were glad to learn now from the lady worker who visited them that the child had conscientious objections based on the principles learned in the home of her stepparents. This certainly speaks well for their faithfulness in these days of want when it is hard to make ends meet with the high cost of living.

One day, our sister was told by the lady, little Hertha noticed a Bible in the chest of drawers she was just opening and, taking it out, suggested that they read in it as she was wont to do with her mother, so that they have now begun studying portions together every evening as they retire to bed.
W. K. Ising.

## The Efficacy of Prayer

An afflicted sister asks our interest in the case of her husband who bitterly opposed the truth she embraced two years ago, finally leaving her after serious matrimonial disputes. It was found that he had joined the French Foreign Legion acting now, it appears, as a musician.
From the day of their separation this sister prayed with her relatives for his salvation, asking the Lord to turn his heart and incline him to reconciliation.
In the solitude of the fastnesses of Morocco he found ampie time to commune with himself and, to the great joy of those praying for him in the homeland, wrote a letter to his wife pleading her forgiveness of his evil conduct as this, he believed, was one of the main inherent qualities of faith. He then went on to suggest that her God could be no other than the one he was longing for himself, and solicits her prayers to find Him whose power was certainly able to change his vile character.
Our sister gives the address of her husband hoping that we might be in a position to have some worker visit and assist him to attain the desired end as there was little hope of his returning home for some years at least. Let us remember this case at the throne of grace that Psalm 126 may some day be the experience of these dear souls when both may again enjoy the blessings of family life in the unity of faith won in the fiery furnace of affliction.

## Living Up to Our Profession

Spraking recently at the church in Berne, Elder E. Gugel, president of the German Swiss Conference preached an instructive sermon on the text in Rev. $14: 1-4$, emphasizing especially the necessity of our personal effort in spiritual growth and the great blessing coming to the individual and the church as a whole by faithfully labouring for the salvation of others. The wording of the text was so familiar to us that we were in danger of losing sight of the fact that, while the first part would most surely come to pass as the fulfilment of God's plan, yet it depended on our personal attitude and co-operation as to whether we ourselves would be included in the company that will gain the victory and stand before the throne on mount Zion with the name of the Father written on our foreheads and singing the praise of the redeemed to His glory.

A few illustrations served to exemplify this thought. A pastor well-known among evangelical circles in Germany had received a letter of eight pages from a man who had attended a series of his lectures in a certain city, to which he made this interesting reply: "I am pleased, indeed, to learn that my labours in your city have been the cause of inspiring you with such great plans of work for the good cause of God. However, I should have been more delighted had other people
written me concerning the great things you had already accomplished instead of receiving a letter of eight pages from you informing me of what you were all planning to do. The impulse for a good action soon vanishes as a snow-ball melts away if it is held too long in one's hand. Take care lest by so doing you will freeze your hands."
Some years ago, Brother Gugel related, he had spoken with a young man on some points of truth kneeling with him in prayer as they had finished. It was only recently that he had learned again of this man from a letter written at our school in Collonges. where he had spent a year in study and now requested that he be given an opportunity to engage in spreading the message himself as a canvasser somewhere in the Italian canton of Tessin in Switzerland for which he is well qualified in that he speaks the Italian, German and French languages.

A Swedish lady coming from Stockholm inquired of the Conference Office at Zurich on her arrival in that city where she could find the church address stating further in her letter that after associating with our brethren up in Sweden, she felt herself so attracted to us, believing to have found in us a. people who really lived out the truth they preached. This was certainly a good testimony and we should make every effort to be true to our profession.

## Southern Bavaria

The cause is onward here in this southern part of Bavaria and our efforts during the last quarter have enjoyed the signal blessings of the Lord, so that 105 souls could be received into church fellowship during this period. We have many evidences that the power of the message is asserting itself in this purely Catholic country. Forty-- seven of these persons came along from Munich, the stronghold of Catholicism where, not so long ago, the Jesuit padre Aman held a series of lectures in all the churches against us; but, as is seen also in this case, nothing can be done against the truth. The meetings of our workers are well attended throughout the field and the people are very eager to learn the truth.

April 27-29 we had very encouraging and blessed district meetings at Kempten in Allgau where, after the testimony meeting on the Sabbath, sixteen persons stepped forward to join the church. At this place also a Jewish physician has made the covenant with God, who, after a long time of diligent study has finally come to know the Messiah in the Word of God. Among the number baptized was another doctor, a dentist who is having considerable difficulty with his relatives on this account.

June $\mathrm{I}-3$. we had a similar gathering at Passau where our meetings were also well attended although the police had removed our public notices. There are bright prospects for a good harvest also for the next quarter and for the future in general but we may truly say that the lábourers are
few: There is no telling how long we may enjoy this liberty for an aggressive work in a country flooded with churches, priests and copvents, and now is our time of opportunity that must be improved to its full extent. C. A. Motzer.
Pres. South Bavarian Conference.

## In the Canvassing Work

The help promised in Psa. I2I:I is a daily experience in our work during these difficult times when, in spite of the continually increasing cost of living in the countries of our Union, people are really buying our books as never before. Considering, for instance, a man's wages to be M. 12,000 a day, it means a great outlay to him to pay M. 25,000 for one of our larger books. In Austria, the same book costs Kr. 50,000, and yet the fact is that we are having good sales, some twenty-five canvassers circulating books there io the value of forty to fifty million kroner a month.
It is evident that many are led to take a more earnest interest in the study of the Word of God as they are pressed with afflictions. One of our colporteurs wrote me the other day that, when he sold a book to a lady, she said to him that she had not expected to find such good books in times like these. A war-invalid, a teacher in Bavaria who had bought Revelation wrote to the brother telling him that the most precious hours of his life now were, when he would sit around the table with his family engaged in the study of this book and he prayed God to bless our good work.

Last week when I presented the book of Daniel to a family, the lady exclaimed in great joy that I had come to them as Philip to the eunuch as they had just recently prayed that the Lord might send them someone who would explain all these wonderful things they had read in the prophecies of Daniel. What an encourggement it is to a colporteur to meet such dear people. Never, in fact, have we had to meet such severe opposition, yet the work is onward and the Lord helps. us to overcome these difficulties.
L. Lutz.

Field Miss. Sec.
Central European Union.

## A Spirit of Sacrifice

A dear sister who has been sending us money for various objects at different times has again enclosed a cheque to the equivalent of 500 Swiss francs. Following the injunction of the Master, "Let not thy left hand know-what thy right hand doeth," she requests us not to divulge her name. Expressing her sorrow at the pitiable conditions obtaining in many countries of the Division, she is convinced that these are all forebodings of the rapidly approaching consummation, though it is evident that a large work in the fields beyond still remains to be done to enable all the nations to hear the good tidings of our coming Saviour.

In designating the purpose of the contribution
sent, she goes on to say: "Several times I have been warned not to be too liberal with my money as we were undoubtedly facing hard times, but I am inclined to think it is just because many reason after this fashion that there are not sufficient funds in the storehouse of God to accomplish the work He has entrusted to His children."
Also a brother sends us some cheering words to accompany a gift after disposing of a small property with "the real estate broker taking off the cream and leaving me only a trifing profit," as he sayys, evidently as an excuse for not sending a larger amount. However, it is not the sum of money actually given that counts, but the genuine spirit of sacrifice in which the contribution is made and our brother may rest assured that it will be used accordingly. Incidentally this appears in a paragraph of his letter reading as follows: "As for us, the Lord has been very precious to our hearts all these years since we have set out to serve and to love and obey Him. Thanks be to God that we have never faltered or doubted in anything the truthfulness of the message which we all love so well and to which we are intending to stick whether in life or in death, as it involves so much, yea our yery soul's salvation.

## A Word from Hungary

Writing from Nagykanizsa in south-western Hungary, Elder Max Voigt adds this encouraging note. "We are now located in this city from where I look after the work in this part of our country. We have hère a little church of thirteen members. This section being chiefly Catholic, we have to contend with no little opposition and prejudice in getting a foothold. However, we trust in the Lord and are of good cheer. We are also well healthwise."

## Neandertal Seminary

We have every reason to thank God for the rich blessings we enjoyed at the Seminary during the school year just closing, though we had to contend with a number of difficulties. We had an enrolment of ino students taxing our capacity to the utmoșt limit and we might have received fifteen more had we been able to supply further room.

Notwithstanding the perplexities occasioned in this section of the country by political conditions, our students have proceeded in their efforts at canvassing, and, during the month of April alone, circulated literature to the value of Mks. $5,804,75$ I which is certainly very encouraging.
E. C. Witzke.

## Persia

From several letters written in April and May by Elder F. F. Oster of Tabriz, Persia, we cull
the following encouraging information as touching their present work and the prospects for the future.
'The work is onward here. I have been kept busy with this and that. Our services are regularly well attended and the people are getting rooted and grounded in the message. Our school work in Tabriz is really a blessing. The children are such a help to us in the way of singing. The parents also come to the meetings and are interested in the truth. We have about forty students. The school at Urumia is not getting on so well and we have closed the Moslem departmént, because the governor ordered that it should be free of charge. Everything in that section of the country is still so unsettled, but we hope that things will soon be better.

There are a few young men I should like to train for the work, but that would mean a larger expenditure in the near future while for the present our appropriation provides only for one native worker.

We consider it a very opportune time now to buy a lot suitable to erect a meeting hall. Everybody strongly advises us to do so. It is so difficult to find rooms large enough for such purposes. The place we have now rented is expensive and inadequate. Last evening, for instance, our meeting was so crowded that there was no more standing room left. A better class of people is coming in now than was the case last fall and we now have a splendid opportunity of bringing the truth before the masses. It would certainly be advisable to put up a little building of our own so that we may have permanent mission quarters.

Our request for three thousand krans for the publishing work is very urgent. At the present time we have no tracts at all in the Persian language, though we have seven manuscripts ready for the press. We also need some publications in he Syriac and Armenian in the Azerbaijan dialect. Dr. Daniel, the leader of the Assyrians has just recently written me from Urumia requesting that he be granted the privilege of translating the book of Daniel and Revelation, into the Syrian, as his contribution to the good work. But I had to write him that for the present we would have to confine our work to some smaller publications and could not afford such a heavy expense. A small hymn book would also be among the needs of the field that would greatly contribute to giving more strength to our work by supplying the music in which these people delight. I have translated quite a number of songs into the Turkish and have already duplicated a few dozen on my mimeograph for present use but they are all worn out and we need new ones."

This good news from Persia is certainly most cheering and we are happy indeed that things are taking such a favourable turn in Persia. There are a number of perplexities facing the work but the outlook for the future is certainly miost encouraging.

